अल हक़्क़ुल मुज्तला फ़ी हुक्मिल मुब्तला (1324)

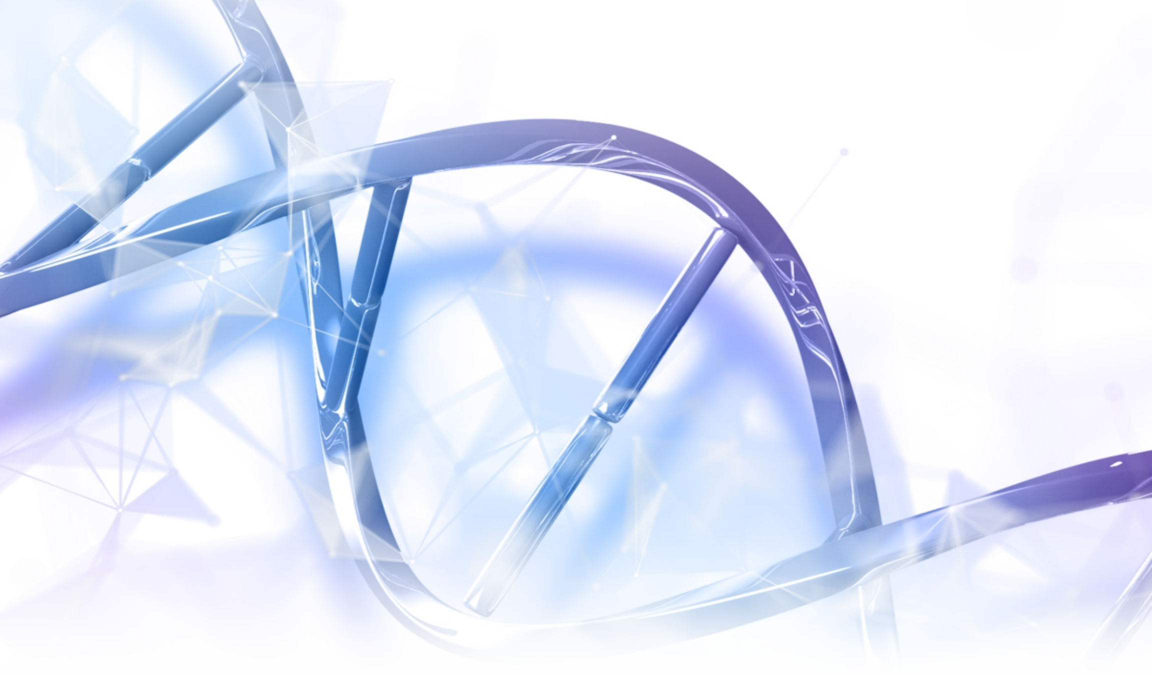
हिन्दी तर्जुमा बनाम

बीमारी
का उड़ कर लगना

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत,

इमाम अहमद रज़ा खान

رحمہ اللہ تعالیٰ



हिंदी :

नबीरा -ए- आला हज़रत, शहज़ादा -ए- क़मरुल उलमा

मौलाना उमर रज़ा ख़ान क़ादरी नूरी बरेलवी

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

अल हक़्क़ुल मुज्तला फ़ी हुक्मिल मुब्तला (1324)

हिन्दी तर्जुमा बनाम

बीमारी

का उड़ कर लगना

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत,

इमाम अहमद रज़ा खान

رحمہ اللہ تعالیٰ

हिंदी :

नबीरा -ए- आला हज़रत, शहज़ादा -ए- क़मरुल उलमा

मौलाना उमर रज़ा ख़ान

क़ादरी नूरी बरेलवी

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

Contents (Click for direct jump)

मसअला : अज़ गोंडा, मुल्क अवध, मुरसलहु मुसलमानान ए गोंडा उमूमन व हाफ़िज़ अब्दुल अज़ीज़ साहिब मुदर्रिस मदरसा अंजुमन इस्लामिया गोंडा, ज़ुल हिज्जा 1324 हिजरी ____

ज़ैद का ख़ून जोश खा रहा है बल्कि एक दो आज़ा जिस्म के बिगड़ गए और इहतिमाल होता है कि आइंदा भी बिगड़ जाएंगे, ऐसे शख़्स की निस्बत अतिब्बा हुक्म देते हैं कि उसके साथ खाना पीना और नशिसत व बरख़ास्त भी क़तई मना है बल्कि अतिब्बा शरअ शरीफ़ का भी ऐसा ही हवाला देते हैं, दरयाफ़्त तलब यह अम्र है कि शरअ शरीफ़ का क्या हुक्म है और ऐसे शख़्स से इजतिनाब लाज़िम है या क्या। मुदल्लल व मुफ़स्सल ज़ेब ए क़लम हो।

अलजवाब :

بسم الله الرحمن الرحیم ـ الحمد لله علی دین الاسلام و الصلوۃ و السلام
علی افضل ھاد الی سبیل السلام و علی اله و صحبه الی یوم القیام به نسأل
السلام و السلامة عن سیئی الاسقام ـ

अहादीस इस बाब में ब ज़ाहिर मुख़्तलिफ़ आईं, हम अव्वलन उन्हें ज़िक्र करें फिर उनके शरई माना की तरफ़ मुतवज्जा हों कि बि तौफ़ीक़िहि तआला इस मसअला में हक़ ए तहक़ीक़ अदा हो।

हदीस ए अव्वल (1)

रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

اتقوا المجذوم کما یتقی الاسد۔

जुज़ामी से बचो जैसा शेर से बचते हैं,

رواہ البخاری فی التاریخ عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

रिवायत इब्न ए जरीर के लफ़्ज़ यह हैं,

فر من المجذوم کفرارك من الاسد۔

जुज़ामी से भाग जैसा शेर से भागता है,

رمز الامام الجلیل السیوطی حسنہ علی ما فی التیسیر او صحتہ علی ما فی فیض القدیر و ذکرہ باللفظ الاول فی الجامع الصغیر و باللفظ الاخیر فی الکبیر۔اقول و فی کلیھما ظاھرا ابو ھریرۃ فالحدیث عنہ فی صحیح البخاری بلفظ فر من المجزوم کما تفر من الاسد و سیأتی و الجواب ان العز و یتبع اللفظ لا سیما و ھو فی البخاری مع زیادات معنی۔

दूसरी (2) हदीस में है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

اتقوا صاحب الجذام کما یتقی السبع اذا ھبط وادیا فاھبطوا غیرہ۔

जुज़ामी से बचो जैसा दरिंदे से बचते हैं, वह एक नाले में उतरे तो तुम दूसरे में उतरो।

رواه ابن سعد فی الطبقات عن عبد اللہ بن جعفر الطیار رضی اللہ تعالی عنهما بسند ضعیف۔

तीसरी (3) हदीस में है रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

کلم المجزوم و بینك و بینه قدر رمح او رمحین ۔

मजज़ूम से इस तौर पर बात कर कि तुझमें उसमें एक दो नेज़े का फ़ासला हो।

رواه ابن السنی و ابو نعیم فی الطب عن عبد اللہ بن ابی اوفی رضی اللہ تعالی عنهما بسند واہ قلت لکن له شاهد یاتی ۔

चौथी (4) हदीस में है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

لا تدیموا النظر الی المجذومین ۔

मजज़ूमों की तरफ़ निगाह जमा कर न देखो।

رواه ابن ماجة و ابن جریر قلت و سنده حسن صالح ۔

दूसरी रिवायत में है,

لا تحدوا النظر الی المجذومین ۔

जुज़ामियों की तरफ़ पूरी निगाह न करो।

رواہ ابو داؤد الطیالسی و البیھقی فی السنن بسند حسن ایضاً

کلھم عن عبد اللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنھما۔

पांचवी (5) हदीस में है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

لا تدیموا النظر الی المجذومین اذا کلمتموھم فلیکن بینکم وبینھم قدر رمح۔

जुज़ामियों की तरफ़ नज़र न जमाओ, उनसे बात करो तो तुममें उनमें एक नेज़े का फ़ासला हो।

رواہ احمد و ابو یعلی و الطبرانی فی الکبیر و ابن جریر عن

فاطمۃ الصغری عن ابیھا السید الشھید الریحانۃ الاصغر و

ابن عساکر عنھا عنہ وعن ابن عباس معاً رضی اللہ تعالی

عنھم جمیعا۔

छठी (6) हदीस में है जब वफ़द ए सक़ीफ़ हाज़िर ए बारगाह ए अक़दस हुए और दस्त ए अनवर पर बैअतें कीं उनमें एक साहिब को यह आरिज़ा था, हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमा भेजा,

ارجع فقد بایعناك۔

वापस जाओ तुम्हारी बैअत हो गई यानी ज़बानी काफ़ी है मुसाफ़ा न होना मानेअ बैअत नहीं।

رواہ ابن ماجۃ۔ قلت بسند حسن عن رجل من اٰل الشرید
یقال لہ عمرو عن ابیہ رضی اللہ تعالی عنہ و رواہ ابن جریر
فسمی اباہ الشرید و ھو الشرید بن سوید الثقفی ذکر الامام
الجلیل السیوطی بالتخریج الاول فی اول الجامع الکبیر و
بالاخر فی مسانید جمع الجوامع۔ اقول بل الحدیث فی صحیح
مسلم بلفظ انا قد بایعناك فارجع کما ھو لفظ ابن جریر
سواء بسواء و قد جربت مثلہ کثیرا علی ھذا الامام فی کثیر
من تصانیفہ الشریفۃ کالجوامع الثلثہ و الخصائص الکبری
وغیرھا و کان مقصودہ رحمہ اللہ تعالی ان یجمع لامثالنا
القاصرین ما قلما تصل الیہ ایدینا فان اقتصرنا علی ما افاد
وذھلنا عن المتداولات فالقصور منا لا منہ رحمہ اللہ تعالی۔

सातवीं (7) हदीस में है, हुज़ूर ए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक मजज़ूम को आते देखा, अनस रदि अल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया,

یا انس اثن البساط لایطأ علیہ بقدمہ۔

ऐ अनस बिछौना उलट दो कहीं यह उस पर अपना पांव न रख दे।

رواہ الخطیب عنہ رضی اللہ تعالی عنہ و فی القلب منہ شیئ و اللہ
تعالی اعلم۔

आठवीं (8) हदीस में है, रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मक्का मुअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरा के दरमियान वादी ए असफ़ान पर गुज़रे, वहां कुछ लोग मजज़ूम पाए, मरकब को तेज़ चलाकर वहां से तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया,

ان کان شیئ من الداء یعدی فھو ھذا۔

अगर कोई बीमारी उड़कर लगती है तो वह यही है।

رواہ ابن النجار عن ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہما و المرفوع منہ عنہ ابن عدی فی الکامل من دون ذکر القصۃ و ھو ضعیف۔

नवीं (9) हदीस में है एक जुज़ामी औरत काबा मुअज़्ज़मा का तवाफ़ कर रही थी, अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने उससे फ़रमाया,

یا اٰمۃ اللہ لا تؤذی الناس لو جلست فی بیتك۔

ऐ अल्लाह की लौंडी! लोगों को ईज़ा न दे, अच्छा हो कि तुम अपने घर में बैठी रहो, फिर वह घर से न निकलीं।

رواہ مالك و الخرائطی فی اعتلال القلوب عن ابن ابی ملیکۃ۔

दसवीं (10) हदीस में है,

ان عمر بن الخطاب قال للمعیقیب رضی اللہ تعالی عنہما اجلس منی قید رمح و کان بہ ذلك الداء و کان بدریا۔

मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हु कि अहले बदर (व मुहाजिरीन साबिक़ीन अव्वलीन रदि अल्लाहु तआला अन्हुम) से हैं, उन्हें यह मर्ज़ था, अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने उनसे फ़रमाया, मुझसे एक नेज़े पर बैठिए।

رواہ ابن جریر عن الزہری قلت مرسل و لا یصح۔

आइंदा हदीसें इसके ख़िलाफ़ हैं।

ग्यारहवीं (11) हदीस में है, अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने सुबह को कुछ लोगों की दावत की, उनमें मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हु भी थे, वह सबके साथ खाने में शरीक किए गए और अमीरुल मोमिनीन ने उनसे फ़रमाया,

خذ مما یلیك و من شقك فلو كان غیرك ما اكلنی فی صحفة و
لكان بینی و بینه قید رمح۔

अपने क़रीब से अपनी तरफ़ से लीजिए अगर आपके सिवा कोई और इस मर्ज़ का होता तो मेरे साथ एक रकाबी में न खाता और मुझमें और उसमें एक नेज़े का फ़ासला होता।

رواہ ابن سعد و ابن جریر عن فقیه المدینة خارجة بن زید
رضی اللہ تعالی عنهما۔

बारहवीं (12) हदीस में है, अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु के दस्तरख़्वान पर शाम को खाना

रखा गया, लोग हाज़िर थे अमीरुल मोमिनीन बरामद हुए कि उनके साथ खाना तनावुल फ़रमाएं, मुएक़ीब इब्न ए अबी फ़ातिमा दौसी सहाबी मुहाजिर ए हब्शा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमाया,

ادن فاجلس و ایم اللہ لو کان غیرك بہ الذی بك لما جلس منی
ادنی من قید رمح۔

क़रीब आइए बैठिए ख़ुदा की क़सम दूसरा होता तो एक नेज़े से कम फ़ासले पर मेरे पास न बैठना।

رویاہ عنہ ذلك فی الغداء و ھذا فی العشاء۔

तेरहवीं (13) हदीस में है, मुहम्मद इब्न ए लबीद अंसारी रदि अल्लाहु तआला अन्हु से बाज़ साकिनान ए मौज़ा ए जिरश ने बयान किया कि अब्दुल्लाह इब्न ए जाफ़र तय्यार रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने हदीस बयान की कि हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जुज़ामी से बचो जैसा दरिंदे से बचते हैं वह एक नाले में उतरे तो तुम दूसरे में उतरो। मैंने कहा वल्लाह अगर अब्दुल्लाह इब्न ए जाफ़र ने यह हदीस बयान की तो ग़लत न कहा, जब मैं मदीना तय्यबा आया, उनसे मिला और इस हदीस का हाल पूछा कि अहले जिरश आपसे यूँ नाक़िल थे, फ़रमाया,

کذبوا و اللہ ماحدثتھم ھذا و لقد رأیت عمر بن الخطاب یؤتی
بالاناء فیہ الماء فی عطیہ معیقیبا فیشرب منہ ثم یتناولہ

عمر من یدہ فیضع فمہ موضع فمہ حتی یشرب منہ فعرفت
انما یصنع عمر ذلك فرارا من ان یدخلہ شیئی من العدوی۔

वल्लाह उन्होंने ग़लत नक़ल की, मैंने यह हदीस उनसे न बयान की, मैंने तो अमीरुल मोमिनीन उमर को यह देखा है कि पानी उनके पास लाया जाता वह मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हु को देते अमीरुल मोमिनीन उनके मुंह रखने की जगह अपना मुंह रखकर पानी पीते, मैं समझता कि अमीरुल मोमिनीन यह इसलिए करते हैं कि बीमारी उड़कर लगने का ख़तरा उनके दिल में न आने पाए।

رویاہ عن محمود رضی اللہ تعالی عنہ۔

इब्न ए साद की रिवायत में एक मुफ़ीद बात ज़ाइद है कि अब्दुल्लाह इब्न ए जाफ़र रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया अमीरुल मोमिनीन फ़ारूक़ ए आज़म जिसे तबीब सुनते मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हु के लिए उससे इलाज चाहते, दो हकीम यमन से आए, उनसे भी फ़रमाया, वह बोले जाता रहे यह तो हम से हो नहीं सकता हाँ ऐसी दवा कर देंगे कि बीमारी ठहर जाए, बढ़ने न पाए। अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया,

عافیة عظیمة ان یقف فلا یزید۔

बड़ी तंदुरुस्ती है कि मर्ज़ ठहर जाए बढ़ने न पाए। उन्होंने दो बड़ी ज़ंबीलें भरवा कर इंदराइन के ताज़ा फ़ल मंगवाए जो ख़रबूज़े की शक्ल और निहायत तल्ख़ होते हैं फिर हर फल के दो-दो टुकड़े और

मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हु को लिटा कर दोनों तबीबों ने एक-एक तलवे पर एक-एक टुकड़ा मलना शुरु किया जब वह ख़त्म हो गया दूसरा टुकड़ा लिया यहाँ तक कि मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हु के मुंह और नाक से सब्ज़ रंग की कड़वी रतूबत निकलने लगी, उस वक़्त छोड़कर दोंनो हकीमों ने कहा अब यह बीमारी कभी तरक़्क़ी न करेगी। अब्दुल्लाह इब्न ए जाफ़र रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा फ़रमाते हैं,

فواللہ ما زال معیقیب متماسکا لا یزید و جعہ حتی مات۔

वल्लाह मुएक़ीब उसके बाद हमेशा एक ठहरी हालत में रहे ता दम ए मर्ग मर्ज़ की ज़्यादती न हुई।

चौदहवीं (14) हदीस में अमीरूल मोमिनीन सिद्दीक़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हु के दरबार में क़ौम ए सक़ीफ़ के सफ़ीर हाज़िर हुए, खाना हाज़िर लाया गया, वह लोग नज़दीक आए मगर एक साहिब कि उस मर्ज़ में मुब्तला थे अलग हो गए, सिद्दीक़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया, क़रीब आओ, क़रीब आए, फ़रमाया खाना खाओ हज़रत क़ासिम इब्न ए मुहम्मद ए इब्न ए अबी बक्र सिद्दीक़ रदि अल्लाहु तआला अन्हुम फ़रमाते हैं,

و جعل ابو بکر یضع یدہ موضع یدہ فیاکل مما یاکل منہ المجذوم۔

सिद्दीक़ ए अकबर रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने यह शुरू किया कि जहाँ से वह मजज़ूम निवाला लेते वहीं से सिद्दीक़ निवाला लेकर नोश फ़रमाते रदि अल्लाहु तआला अन्हु।

رواہ ابو بکر بن ابی شیبة و ابن جریر عن القاسم ۔

ग़ालिबन यह वही मरीज़ है जिनसे ज़बानी बैअत पर इकतिफ़ा फ़रमाई गई थी।

पंद्रहवीं (15) हदीस ए जलील में है,

ان رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اخذ بید رجل مجذوم
فادخلها معه فی القصعة ثم قال کل ثقة باللہ و توکلا علی اللہ ۔

रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक जुज़ामी साहिब का हाथ पकड़ कर अपने साथ प्याले में रखा और फ़रमाया अल्लाह पर तकिया है और अल्लाह पर भरोसा।

رواہ ابو داؤد و الترمذی و ابن ماجة و عبد بن حمید و ابن خزیمة و ابن ابی عاصم و ابن السنی فی عمل الیوم و اللیلة و ابو یعلی و ابن حبان و الحاکم فی المستدرك و البیهقی فی السنن و الضیاء فی المختارة و ابن جریر و الامام الطحاوی کلهم من جابر بن عبد اللہ رضی اللہ تعالی عنهما کذا ذکر الامام الجلیل الجلال السیوطی فی اول قسمی جامعه الکبیر و زدت انا ابن جریر و الطحاوی قلت و به علم ان قصر المشکوة

على ابن ماجة ليس فی موضعه ثم الحديث سكت عليه و صححه ابن خزيمة و ابن حبان و الحاكم و الضياء و قال المناوی فی التيسير باسناد حسن و تصحيح ابن حبان و الحاكم قال ابن حجر فيه نظر اه اقول لكن فيه مفضل بن فضالة البصری بالباء اخو مبارك قال فی التقريب ضعيف و قال الترمذی هذا حديث غريب لا نعرفه الا من حديث يونس بن محمد عن المفضل بن فضالة و المفضل بن فضالة هذا شيخ بصری و المفضل بن فضالة شيخ آخر مصری اوثق من هذا و اشهر وروی شعبة هذا الحديث عن حبيب بن الشهيد عن ابن بريدة قال ابن عمر اخذ بيد مجذوم و حديث شعبة اشبه عندی و اصح اه و اخرج ابن عدی فی الكامل هذا الحديث للمفضل المذكور و قال لم ار فی حديثه انكر من الحديث قال و رواه شعبة عن حبيب عن ابن بريدة ان عمر اخذ بيد مجذوم الحديث اه و لم يذكر الذهبی فی الميزان فی المفضل هذا جرحا مفسرا بل و لا غير مفسر مما يبلغ درجة التضعيف البتة انما نقل عن يحيی انه قال ليس هو بذاك و عن الترمذی ما قدمنا ان المصری اوثق منه و عن النسائی انه قال ليس بالقوی ـ اقول و لا يخفی عليك البون

البین بین لیس بالقوی و لیس بقوی وقد روی عنه ذاك المؤدب الثقة الثبت و عبد الرحمٰن بن مهدی ذاك الجبل الشامخ الامام الحافظ قال البخاری فی علی بن عبد اللہ المعروف بابن المدینی ما استصغرت نفسی الا عندہ و قال ابن المدینی فی عبد الرحمٰن هذا ما رأیت اعلم منه و کذلك موسی بن اسمٰعیل ذاك الثقة الثبت و جماعة لا جرم حسنه الحافظ و اطلاق الصحیح علی الحسن غیر مستنکر وقد صححه امام الائمة ابن خزیمة و من تبعه و قد وجدت له متابعا فان الامام الاجل ابا جعفر الطحاوی اخرجه اولا بالطریق المذکور فقال حدثنا فهد (یعنی ابن سلیمٰن بن یحیی) ثنا ابو بکر بن ابی شیبة ثنا یونس بن محمد الحدیث ثم قال حدثنا ابن مرزوق ثنا محمد بن عبد اللہ الانصاری ثنا اسمٰعیل بن مسلم عن ابی الزبیر عن جابر عن رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم مثله اھ قلت و به یعلم ما فی کلام الامام الترمذی و اللہ تعالی اعلم ثم اعلم انه وقع فی الجامع الصغیر لهذا الحدیث رمز حب ك اقول و لم اره فی المجتبی بل لیس فیه لان مداره علی ما ذکر الترمذی علی المفضل کما علمت و المفضل هذا لیس من رواة النسائی اصلا و قد سقط

الحديث من نسخة سيدى على المتقى قدس سره و لذا اورده
من القسم الاول للجامع الكبير و قد رمز له فيه د، ت، ه الخ و
هو الصحيح الا ان يكون النسائى رواه فى الكبرى فبالنظر اليه
يقال ع و هو بعيد ثم الواقع فى المشكوة معزيا لابن ماجة ما
ذكرنا اعنى كل ثقة بالله و فى جامع الترمذى ثم قال كل بسم
الله ثقة بالله و توكلا عليه قال العلامة على القارى اما ترك
المؤلف البسملة مع وجودها فى الاصول فاما محمولة على رواية
منفردة غريبة لابن ماجة او على غفلة من صاحب المشكوة او
المصابيح اه اقول سبحٰن الله هو انما نقله عن ابن ماجة فلو
زاد البسملة نسب الى الفضلة ثم لم يتفرد ابن ماجة بترك
البسملة بل هو كذلك عند ابى داؤد ايضا رواه عن عثمٰن بن ابى
شيبة عن يونس بن محمد و ابن ماجة عن ابى بكر بن ابى
شيبة و مجاهد ابن موسى و محمد بن خلف العسقلانى كلهم
عن يونس بترك البسملة و الترمذى عن احمد بن سعيد
الاشقر و ابراهيم بن يعقوب كلاهما عن يونس مع البسملة
فافهم۔

सोलहवीं (16) हदीस में है रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

كل مع صاحب البلاء تواضعا لربك و ايمانا۔

बला वाले के साथ खाना खा अपने रब के लिए तवाज़ो और सच्चे यक़ीन की राह से।

رواه الامام الاجل الطحاوی عن ابی ذر رضی اللہ تعالی عنه قلت

هكذا اورده فی الجامع كل باللام و الذی رایته الامام

الطحاوی کن بالنون و اللہ تعالی اعلم۔

सत्रहवीं (17) हदीस में है कि एक बीबी ने उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हा से पूछा, क्या रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मजज़ूमों के हक़ में फ़रमाते,

فروا منهم كفراركم من الاسد۔

उनसे ऐसा भागो जैसा शेर से भागते हो। उम्मुल मोमिनीन ने फ़रमाया,

كلا و لكنه لا عدوى فمن عادى الاول۔

हरगिज़ नहीं बल्कि यह फ़रमाते थे कि बीमारी उड़कर नहीं लगती जिसे पहले हुई उसे किस की उड़कर लगी।

رواه ابن جرير عن نافع بن القاسم عن جدته فطيمة۔

अक़ूल : उम्मुल मोमिनीन का यह इंकार अपने इल्म की बिना पर है यानी मेरे सामने ऐसा न फ़रमाया बल्कि यूँ फ़रमाया, और है यह

कि दोनों इरशाद हुज़ूर ए अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ब सेहत ए काफ़िया साबित है।

अठारहवीं (18) से तीस (30) तक हदीस ए जलील अज़ीम सहीह मशहूर बल्कि मुतावातिर जिससे उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हा ने इस्तिदलाल किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

لا عدوی ۔ رواہ الائمۃ احمد و الشیخان و ابو داؤد و ابن ماجۃ
عن ابی ھریرۃ (ع) و احمد و الستۃ الا النسائی عن انس و
احمد و الشیخان و ابن ماجۃ و الطحاوی عن ابن عمر و احمد
و مسلم و الطحاوی عن السائب بن یزید وھم و ابن جریر
جمیعا عن جابر و احمد و الترمذی و الطحاوی عن ابن
مسعود و احمد و ابن ماجۃ و الطحاوی و الطبرانی و ابن جریر
عن ابن عباس و الثلثۃ الاخیرۃ عن ابی امامۃ و ابن خزیمۃ و
الطحاوی و ابن حبان و ابن جریر عن سعد بن ابی وقاص و
الامام الطحاوی عن ابی سعید الخدری و الشیرازی فی الالقاب
و الطبرانی فی الکبیر و الحاکم و ابو نعیم فی الحلیۃ عن عمیر
بن سعد الانصاری و الطبرانی و ابن عساکر عن عبد الرحمٰن
بن ابی عمیرۃ المزنی و ابن جریر عن ام المومنین و ایضاً
صححہ و القاضی محمد ابن عبد الباقی الانصاری فی جزئہ

الحدیثی عن امیر المؤمنین علی کرم اللہ وجھہ الکریم بلفظ لا یعدی سقیم صحیحا لخصناہ عن الجامع الکبیر مع جمع و زیادات۔

इसी हदीस के मुतअद्दद तुर्क़ में वह जवाब ए क़ातिअ हर शक व इरतियाब इरशाद हुआ जिसे उम्मुल मोमिनीन ने अपने इस्तिदलाल में रिवायत फ़रमाया सहीहैन व सुनन अबी दाऊद व शरह ए मआनिल आसार इमाम तहावी वग़ैरहा में हदीस अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से है जब हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया कि

ع : رواہ عنہ بطریق کثیرۃ شتی ھم و الامام الطحاوی و الدار قطنی فی المتفق و الخطیب و البیھقی و ابن جریر و اُخرون و انننن نسیہ ابو ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ من بعد کما رواہ البخاری و الطحاوی و ابن جریر وغیرھم ۱۲ منہ۔

बीमारी उड़कर नहीं लगती, एक बादिया नशीन ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह फिर ऊंटों का यह क्या हाल है कि वह रेती में होते हैं जैसे हिरन यानी साफ़ शफ़्फ़ाफ़ बदन, एक ऊंट ख़ारिश वाला आकर उनमें दाख़िल होता है जिससे ख़ारिश हो जाती है। हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

فمن اعدی الاول۔

उस पहले को किसकी उड़कर लगी। अहमद व मुस्लिम व अबू दाउद व इब्न ए माजा के यहाँ हज़रत इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से है, इरशाद फ़रमाया,

ذلکم القدر فمن اجرب الاول۔

यह तक़दीरी बातें हैं भला पहले को किसने खुजली लगा दी। यह इरशाद अहादीस मज़कूरा अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद व अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास व अबू उमामा व उमैर इब्न ए साद रदि अल्लाहु तआला अन्हुम में मरवी हुआ, हदीस ए अख़ीर में इस तौज़ीह के साथ है कि फ़रमाया,

الم تروا الی البعیر یکون فی الصحراء فیصبح و فی کرکرته او فی مراق بطنه نکتة من جرب لم تکن قبل ذلك فمن اعدی الاول

क्या देखते नहीं कि ऊंट जंगल में होता है यानी अलग थलग कि उसके पास कोई बीमार ऊंट नहीं सुबह को देखो तो उसके बीच सीने या पेट की नरम जगह में खुजली का दाना मौजूद है, भला उस पहले को किसकी उड़कर लग गई। अक़ूल : हासिल ए इरशाद यह है कि क़त्अ ए तसलसुल के लिए इब्तिदाअन बग़ैर दूसरे से मुंतक़िल हुए ख़ुद उसमें बीमारी पैदा होने का मानना लाज़िम है तो हुज्जत ए क़ातिआ से साबित हुआ कि बीमारी ख़ुद ब ख़ुद भी हादिस हो जाती है और जब यह मुसल्लम है तो दूसरे में इंतक़ाल के सबब पैदा होना

महज़ वहम अलील व इद्दआ ए बे दलील रहा जब एक में ख़ुद पैदा हो सकती है तो यूँ ही हज़ार में।

فلا یوسوسن العدو الرجیم فی قلب مریض ان القائلین

بالاعداء لا یحصرون المرض فیه حتی یلزمهم اعداء الاول

فافهم و تثبت۔

इकत्तीसवीं (31) हदीस कि इमाम अहमद व बुख़ारी व मुस्लिम व अबू दाऊद व इब्न ए माजा ने अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से इसी क़दर रिवायत की कि हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

لا یوردن ممرض علی مصح۔

हरगिज़ बीमार जानवर तंदुरुस्त जानवरों के पास पानी पिलाने को न लाए जाएं। बैहक़ी ने सुनन में यूँ मुतव्वलन तख़रीज की कि इरशाद फ़रमाया,

لا عدوی و لا یحل الممرض علی المصح و لیحل المصح حیث شاء فقیل یارسول الله و لم ذلك قال لانه اذی و الله تعالی اعلم۔

बीमारी उड़कर नहीं लगती और तंदुरुस्त जानवरों के पास बीमार जानवर न लाएं और तंदुरुस्त जानवरों वाला जहाँ चाहे ले जाए।

अर्ज़ की गई, यह किस लिए। फ़रमाया, इसलिए कि इसमें अज़ीयत है यानी लोग बुरा मानेंगे उन्हें ईज़ा होगी वल्लाहु तआला आलम।

قلت و قد رواه مالك فی مؤطاه انه بلغه عن بكير بن عبد الله بن الاشج عن ابن عطية ان رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم قال لا عدوی و لا هام و لا صفر و لا یحل الممرض علی المصح و لیحلل المصح حیث شاء فقالوا یا رسول الله و ما ذاك فقال رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم انه اذی هكذا رواه یحیی مرسلا و تابعه جماعة من رواة المؤطا و خالفهم القعنبی و عبد الله بن یوسف و ابو مصعب و یحیی بن بكیر فجعلوه عن ابی عطیة عن ابی هریرة موصولا غیران ابن بكیر قال عن ابی عطیة و لا خلف فهو عبد الله بن عطیة الاشجعی و یكنی ابا عطیة و وهم بعض رواة المؤطا فی جعله عن ابی عطیة عن ابی برزة و انما هو عن ابی هریرة رضی الله تعالی عنهما افاده الزرقانی۔

यह हदीस दोनों मज़मून की जामेअ है।

बत्तीसवीं (32) हदीस ए सहीह जलील कि ऐसा ही रंग ए जामेईयत रखती है सहीह बुख़ारी शरीफ़ में अबू हुरैरा रदि अल्लाहु तआला अन्हु से है हुज़ूर सय्यिद ए आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

لا عدوی و فر من الجذوم کما تفر من الاسد۔

बीमारी उड़कर नहीं लगती और जुज़ामी से भाग जैसा शेर से भागता है।

اوردہ الامام الجلیل الجلال السیوطی فی جامعہ الکبیر بھذا اللفظ عازیا لابن جریر عن ابی قلابۃ و فی قسمہ الاول بلفظ لا عدوی و لا طیرۃ و لا ھامۃ و لا صفر و اتقوا المجذوم کما تتقوا الاسد عازیا لسنن البیہقی عن ابی ھریرۃ و اوردہ فی اول الجامع ایضا بلفظ لا عدوی و لا طیرۃ و لا ھامۃ و لا صفر و فر من المجذوم کما تفر من الاسد عازیا لاحمد و البخاری عن ابی ھریرۃ و ھو کذلک فی الجامع الصحیح و بہ ظھر ما قدمنا ان العزو یتبع اللفظ فبالنظر الی حدیث ابی قلابۃ عددناہ بحیالہ و لذا اوردناہ بلفظہ و ھو بعینہ لفظ البخاری و ان اشتمل علی زیادات لا توقف لھذا المعنی علیھا اقول و ابو قلابۃ ھذا ھو عبد اللہ بن زید الجرمی من ثقات التابعین و علمائھم کثیر الارسال و کان الاولی ان ینبہ علیہ ثم ان العلامۃ الشمس السخاوی قال فی حدیث اتقوا ذوی العاھات المعنی فر من المجذوم فرارک من الاسد کما ورد فی بعض الفاظ الحدیث و ھو متفق علیہ عن ابی ھریرۃ مرفوعا بمعناہ اھ و رأیتنی کتبت

علیه ما نصه اقول لم اره لمسلم انما فیه قوله صلی الله تعالی
علیه وسلم لمجذوم انا قد بایعناك فارجع نعم هو فی حدیث
البخاری بلفظ فر من المجذوم کما تفر من الاسد و الیه و
حده عزاه فی المشکوة و کذا الامام النووی فی شرح مسلم
تحت حدیثه المذکور و کذا الامام السیوطی فی اول جامعه
الکبیر فالله تعالی اعلم ـ

अब बितौफ़ीक़िल्लाही तआला तहक़ीक़ ए हुक्म सुनिए। अक़ूल व बिल्लाहित तौफ़ीक़ अहादीस क़िस्म ए सानी तो अपने इफ़ादा में साफ़ सरीह हैं कि बीमारी उड़कर नहीं लगती, कोई मर्ज़ एक से दूसरे की तरफ़ सरायत नहीं करता, कोई तंदुरुस्त बीमार के क़रीब व इख़्तिलात से बीमार नहीं हो जाता, जिसे पहले शुरु हुई उसे किसकी उड़कर लगी। इन मुतावातिर व रौशन व ज़ाहिर इरशादात ए आलिया को सुनकर यह ख़्याल किसी तरह गुंजाइश नहीं पाता कि वाक़ै में तो बीमारी उड़कर लगती है मगर रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ज़माना ए जाहिलियत का वस्वसा उठाने के लिए मुतलक़न इसकी नफ़ी फ़रमाई फिर हुज़ूर ए अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम व अजिल्ला ए सहाबा किराम रदि अल्लाहु तआला अन्हुम की अमली कार्रवाई — मजज़ूमों को अपने साथ खाना खिलाना, उनका झूठा पानी पीना, उनका हाथ अपने हाथ से पकड़कर बर्तन में रखना, ख़ास उनके खाने की जगह से निवाला उठाकर खाना,

जहाँ मुंह लगाकर उन्होंने पिया उसी जगह मुंह रखकर ख़ुद नोश करना — यह और भी वाज़ेह कर रही है कि अदवा यानी एक की बीमारी दूसरे को लग जाना महज़ ख़्याल ए बातिल है वर्ना अपने आपको बला के लिए पेश करना शरअ हरगिज़ रवा नहीं रखती,

قال اللہ تعالیٰ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّهْلُکَةِ۔

आप अपने हाथों हलाकत में न पड़ो।

रहीं क़िस्म ए अव्वल की हदीसें वह उस दर्जा ए आलिया सेहत पर नहीं जिस पर अहादीस ए नफ़ी हैं उनमें अक्सर ज़ईफ़ हैं जैसा कि हम बयान व इशारा कर आए और बाज़ ग़ायत दर्जा हसन हैं, सिर्फ़ हदीस ए अव्वल (1) की तसहीह हो सकती है मगर वही हदीस उससे आला दर्जा पर जो सहीह बुख़ारी में आई ख़ुद उसमें इब्ताल ए अदवा मौजूद कि मजज़ूम से भागो और बीमारी उड़कर नहीं लगती तो यह हदीस ख़ुद वाज़ेह फ़रमा रही है कि भागने का हुक्म उस वस्वसा व अंदेशा की बिना पर नहीं मअ हाज़ा सेहत में उसका पाया भी दीगर अहादीस ए नफ़ी से गिरा हुआ है कि उसे इमाम बुख़ारी ने मुसनदन रिवायत न किया बल्कि बतौर ए तालीक़,

حیث قال قال عفان و عفان هذا و ان کان من شیوخ البخاری
فکثیرا ما یروی عنه بالواسطة کما فی فتح الباری و عدوله عن
حدثنا المعتاد له فی جمیع کتابه الی قال لا یکون الا لوجه و هذا

و ان كان وصلا على طريق ابن الصلاح فليس المختلف فيه كالمتفق عليه و قد جزم المحقق على الاطلاق فى باب العنين من فتح القدير ان البخارى رواه معلقا۔ثم لعلك تقول مالك حصرت الصحة فى الحديث الاول اليس فيما ذكرت حديث انا قد بايعناك فارجع۔اقول انما يرويه مسلم هكذا حدثنا يحيى بن يحيى انا هشيم ح و ثنا ابو بكر بن ابى شيبه ناشريك بن عبد الله و هشيم بن بشير عن يعلى بن عطاء عن عمرو بن الشريد عن ابيه رضى الله تعالى عنه و قال ابن ماجة حدثنا عمرو بن رافع ثنا هشيم عن يعلى بن عطاء الخ و هشيم بن شريك كلاهما مدلس و قد عنعنا قال فى التقريب هشيم بن بشير ثقة ثبت كثير التدليس و الارسال الخفى و قال فى شريك صدوق يخطى كثيرا تغير حفظه منذ ولى القضاء بالكوفة و قال فى تهذيب التهذيب قال عبد الحق الاشبيلى كان يدلس و قال ابن القطان كان مشهورا بالتدليس اه قال و يروى له مسلم فى المتابعات اه كما ههنا اخرج له بمتابعة هشيم اما قول من قال ان عنعنة المدلسين فى الصحيحين محمول على السماع فاقول تقليد جامد و لا ننكر تحسين الظن فليس التخمين كالتبيين اصلا ۔

कोई हदीस सुबूत ए अदवा में नस नहीं, यह तो मुतावातिर हदीसों में फ़रमाया कि बीमारी उड़कर नहीं लगती और यह एक हदीस में भी नहीं आया कि आदी तौर पर उड़कर लग जाती है। हदीस ए चहारुम (4) कि "जुज़ामीयों को नज़र जमाकर न देखो उनकी तरफ़ तेज़ निगाह न करो" साफ़ यह मोहमल रखती है कि उधर ज़्यादा देखने से तुम्हें घिन आएगी, नफ़रत पैदा होगी, उन मुसीबत ज़दों को हक़ीर समझोगे, एक तो यह ख़ुद हज़रत ए इज़्ज़त को पसंद नहीं फिर इससे उन गिरफ़्तारान ए बला को नाहक़ अज़ीयत पहुंचेगी और यह रवा नहीं। अल्लामा मनावी तैसीर शरह ए जामे सग़ीर में फ़रमाते हैं,

(لا تحدوا النظر) لانه اذی ان لا تعافوهم فتزدروهم او تحتقروهم۔

अल्लामा फ़तनी मजमअ ए बिहारुल अनवार में फ़रमाते हैं,

لا تديموا النظر الى المجذومين لانه اذا ادامه حقره و تأذی به المجذوم۔

हदीस ए शशुम (6) में कि उन सक़फ़ी से फ़रमाया, "पलट जाओ तुम्हारी बैअत हो गई" मुतअद्दिद वुजूह है, (1) उन्हें मजलिस ए अक़दस में न बुलाया कि हाज़िरीन देखकर हक़ीर न समझें। (2) हुज़्ज़ार में किसी को देखकर यह ख़्याल न पैदा हो कि हम उनसे बेहतर हैं, ख़ुदबीनी उस मर्ज़ से भी सख़्त तर बीमारी है। (3) मरीज़ अहले

मजमअ को देखकर ग़मगीन न हो कि यह सब ऐसे चैन में हैं और वह बला में, तो उसके क़ल्ब में तक़दीर की शिकायत पैदा होगी। (4) हाज़िरीन का लिहाज़ ए ख़ातिर फ़रमाया कि अरब बल्कि अरब व अजम जमहूर बनी आदम बित् तबअ ऐसे मरीज़ की क़ुरबत से बुरा मानते हैं, नफ़रत लाते हैं। (5) अक़ूल : मुमकिन कि ख़ातिर ए मरीज़ का लिहाज़ फ़रमाया कि ऐसा मरीज़ ख़ुसूसन नौ मुब्तला ज़ी वजाहत मजमअ में आते हुए शर्माता है। (6) अक़ूल : मुमकिन कि मरीज़ रदि अल्लाहु तआला अन्हु के हाथों से रतूबत निकलती थी तो न चाहा कि मुसाफ़ह फ़रमाएं, ग़रज़ वाक़िया हाल महल ए सद गूना इहतिमाल होता है, हुज्जत ए आम नहीं हो सकता। मजमउल बिहार में है,

ارجع فقد بايعناك انما رده لئلا ينظر اليه اصحابه صلى الله تعالى عليه وسلم فيزدرونه ويرون لانفسهم عليه فضلا فيدخلهم العجب او لئلا يحزن المجذوم برؤيه النبى صلى الله تعالى عليه وسلم و اصحابه و ما فضلوا به فيقل شكره على بلاء الله تعالى۔

हदीस ए हफ़्तुम (7) कि बिछौना लपेटने को फ़रमाया, अक़ूल : मुमकिन कि इसलिए फ़रमाया हो कि मरीज़ के पांव से रतूबत न टपके। हदीस ए हशतुम (8) कि अगर कोई बीमारी उड़कर लगती हो तो जुज़ाम है। "अगर" का लफ़्ज ख़ुद बता रहा है कि उड़कर लगना साबित नहीं। तैसीर में है,

قوله ان كان دليل على ان هذا الامر غير محقق عنده اه اقول حمله على الشك و ما كان ينبغى و انما حقه ان نقول قال رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم ان كان فى شيئ من ادويتكم خير ففى شرطة محجم او شربة من عسل الحديث رواه احمد و الشيخان و النسائى عن جابر رضى الله تعالى عنه و لا شك ان فى العسل خيرا كما نطق به القران العزيز و فى الحجامة ايضاً كما دل عليه المستفيض من الاحاديث القولية و الفعلية و قال صلى الله تعالى عليه وسلم لو كان شيئى سابق القدر لسبقته العين رواه احمد و مسلم و الترمذى عن ابن عباس و احمد و الترمذى و ابن ماجة بسند صحيح عن اسماء بنت عميس رضى الله تعالى عنهم لا شك ان القدر لا يسبقه شيئى فاذا ثبت الوجهان فى امثال المقال جاء الاحتمال فبطل الاستدلال

-

रहा उस वादी से जल्द गुज़र जाना, अक़ूल : इसमें वह पांच वुजूह पेशीं जागुज़ीं जो हदीस ए शशुम में गुज़रीं, ففهم

हदीस ए नहुम (9) कि फ़ारुक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हु ने उन बीबी को मनअ फ़रमाया, अक़ूल : वहां भी चार वजह ए अव्वलीं जारी,

كما لا يخفى بادنى تأمل۔

हदीस ए याज़दहुम (11) व दवाज़दहुम (12) का फ़िक़रा कि अमीरुल मोमिनीन ने मुएक़ीब रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा से फ़रमाया, दूसरा होता तो मुझसे एक नेज़े के फ़ासला पर बैठता, अक़ूल : उन्हीं हदीसों में है कि उनको अपने साथ खिलाया, अगर यह अम्र अदवा का सबब ए आदी होता तो अहले फ़ज़्ल की ख़ातिर से अपने आपको मअरिज़ ए बला में डालना रवा न होता और तेरहवीं हदीस (13) ने तो ख़ूब ज़ाहिर कर दिया कि अमीरुल मोमिनीन ख़्याल ए अदवा की बीख़ कुनी फ़रमाते थे, निरी ख़ातिर मंज़ूर थी तो उस शिद्दत ए मुबालग़ा की क्या हाजत होती कि पानी उन्हें पिलाकर उनके हाथ से लेकर ख़ास उनके मुंह रखने की जगह पर मुंह लगाकर ख़ुद पीते, मालूम हुआ कि अदवा बे अस्ल है तो उस फ़रमाने का मंशा मसलन यह हो कि ऐसे मरीज़ से तनफ़्फ़ुर इंसान का एक तबई अम्र है, आपका फ़ज़्ल उस पर हामिल है कि वह तनफ़्फ़ुर मुज़महिल व ज़ाइल हो गया दूसरा होता तो ऐसा न होता। हदीस ए सी व यकुम (31) कि तंदुरुस्त जानवरों के पास बीमार न लाएं जाएं,

अक़ूल : इसकी वजह ख़ुद हदीस मोअत्ता ए इमाम मालिक व सुनन बैहक़ी ने ज़ाहिर कर दी कि यह सिर्फ़ लोगों के बुरा मानने के लिहाज़ से है वर्ना बीमारी उड़कर नहीं लगती व लिहाज़ा हमने इस हदीस को अहादीस ए क़िस्म ए अव्वल में शुमार भी न किया। अब न

रही मगर पांच हदीसें अव्वल (1), दुवम (2), सुवम (3), पंजुम (5), दहुम (10), अक़्ल : क़तअ ए नज़र इससे कि उनमें दुवम की सनद वाही और सुवम की ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए जाफ़र रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने जिनकी तरफ़ वह निस्बत की जाती थी तकज़ीब फ़रमाई और दहुम कि अमीरूल मोमिनीन से एक सहाबी जलीलुल क़दर मिनजुमला असहाब ए बद्र व मुहाजिरीन साबिक़ीन अव्वलीन रदि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन की निस्बत उसका सुदूर सख़्त मुस्तबाद था, मुतअद्दद हदीसों ने इसका ख़िलाफ़ साबित कर दिया जैसा कि अमीरूल मोमिनीन से मज़नून था।

كما سبق ذلك كله فهذا منقطع باطنا و معلول غير مقبول۔

उनमें किसी का हासिल हदीस ए अव्वल के हासिल से कुछ ज़ाइद नहीं और उनमें वही सहीह या हसन है तो उसकी तरफ़ तवज्जो काफ़ी। उलमा के लिए यहाँ मुतअद्दद तरीक़े हैं, अव्वल उसके सुबूत में कलाम यह तरीक़ा उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा रदि अल्लाहु तआला अन्हा का है जैसा कि हदीस ए हफ़्दहुम (17) में गुज़रा।

اقول طریقتها رضی الله تعالی عنها معروفة فی امثال الاحادیث

التی ترد علی خلاف ما عندها من العلم القطعی المستند الی

القراٰن العظیم او السماع الشفاهی من حبیب الکریم صلی الله

تعالی علیه وسلم ان تنسب راویها الی السهو و الوهم فی

السماع و الفهم کما قالت فی حدیث امیر المومنین عمر رضی

الله تعالی عنه عن النبی صلی الله تعالی علیه وسلم ان المیت

لیعذب ببعض بکاء اهله علیه یرحم الله عمر لا و الله ما حدث

رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم ان الله یعذب المومن

ببکاء اهله و لکن الله تعالی یزید الکافر عذابا ببکاء اهله علیه

و قالت حسبکم القراٰن وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ اُخْرٰی رواه

الشیخان و قالت یغفر الله لابی عبد الرحمٰن ترید ابن عمر

رضی الله تعالی عنهم فانه ایضا روی الحدیث کابیه اما انه لم

یکذب و لکنه نسی انما مر رسول الله صلی الله تعالی علیه وسلم

علی یهودیة یبکی علیها فقال انهم لیبکون علیها و انها

لتعذب فی قبرها رویاه ایضا و فی لفظ ام و الله ما تحدثون هذا

الحدیث عن الکاذبین و لکن السمع یخطی و ان لکم فی القراٰن

ما یشفیکم ان لَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ اُخْرٰی و لکن رسول الله صلی

الله تعالی علیه وسلم قال ان الله عزوجل لیزید الکافر عذابا

ببعض بکاء اهله علیه رواه الامام الطحاوی و قالت فی

حدیثهما ایضا اعنی امیر المؤمنین و ابنه عبد الله رضی الله

تعالی عنهم ان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم قال فی نتنی بدر

و الذی نفسی بیده ما انتم باسمع لما اقول منهم رویاه ایضا

انما قال النبی صلی الله تعالی علیه وسلم انهم لیعلمون الان ما

كنت اقول لهم حق و قد قال الله تعالى اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى
رواه البخاری و لما بلغها حدیث ابی هریرة رضی الله تعالی عنه
ان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم قال ان الطیرة فی المرأة و
الدار و الفرس فغضبت غضبا شدیدا و قالت و الذی نزل
القراٰن علی محمد صلی الله تعالی علیه وسلم ما قالها رسول الله
صلی الله تعالی علیه وسلم انما قال اهل الجاهلیة کانوا
یتطیرون من ذلك رواه الطحاوی و ابن جریر عن قتادة عن ابی
حسان و رواه ایضا الحاکم و البیهقی و ما ذلك الا لان العلم
عندها من النبی صلی الله تعالی علیه وسلم علی خلاف ذلك فقد
قالت کان النبی صلی الله تعالی علیه وسلم یبغض الطیرة و
یکرهها رواه الامام الطحاوی و روی ایضا انه قیل لعائشة ان
ابا هریرة یقول لان یمتلی جوف احدکم قیحا خیر له من ان
یمتلیئ شعرا فقالت یرحم الله أبا هریره حفظ اول الحدیث و
لم یحفظ اٰخره ان المشرکین کانوا یهاجون رسول الله صلی الله
تعالی علیه وسلم فقال لان یمتلیئ جوف احدکم قیحا خیر له
من ان یمتلیئ شعرا من مهاجاة رسول الله صلی الله تعالی علیه
وسلم اھ ذلك لانها سمعت النبی صلی الله تعالی علیه وسلم
یقول ان من الشعر لحکمة و سمعته صلی الله تعالی علیه وسلم

يتمثل بشعر ابن رواحة رضى الله تعالى عنه و ربما قال صلى الله
تعالى عليه وسلم هذا البيت و يأتيك بالاخبار من لم تزود
روى الكل الطحاوى۔ كذلك قالت ههنا لسماعها منه صلى الله
تعالى عليه وسلم لا عدوى فمن اعدى الاول و السبب فى ذلك
ما اشرنا اليه من ان اخبار الاحاد لا تعارض ما عندها من
القطعى فما وقع من العلامة ابى الفرج ابن الجوزى حيث ذكر
فى حديث الشوم فى ثلث ان عائشة رضى الله تعالى عنها قد
غلطت على من روى هذا الحديث و قالت انما كان اهل
الجاهلية يقولون الطيرة فى المرأة و الدار و الدابة ثم قال و
هذا رد لصريح خبر روتة ثقات الخ كما نقله الامام العينى فى
عمدة القارى منشؤة الغفلة عن النكتة التى ذكرتها ثم قوله و
قالت انما كان اهل الجاهلية يقولون الخ اقول ما قالته بل
روته عن النبى صلى الله تعالى عليه وسلم كما هو صريح نص
رواية الطحاوى و من ذكرنا جميعا و اى ثقة اوثق منها رضى
الله تعالى عنها۔

दुवम मजज़ूम वग़ैरह से भागने की हदीसें मंसूख़ हैं, अहादीस ए नफ़ी अदवा ने उन्हें नस्ख़ कर दिया, उमदतुल क़ारी शरह ए सहीह बुख़ारी में इमाम क़ाज़ी अयाज़ से मनक़ूल,

ذهب عمر رضی اللہ تعالی عنہ و جماعۃ من السلف الی الاکل
معہ و ان الامر باجتنابہ منسوخ و ممن قال بذلك عیسی بن
دینار من المالکیۃ اھو ردہ الامام النووی بوجھین احدھما ان
النسخ یشترط فیہ تعذر الجمع بین الحدیثین و لم یتعذر
بل قد جمعنا بینھما و الثانی انہ یشترط فیہ معرفۃ التاریخ و
لیس ذلك موجودا ھھنا اقول نص القاضی ان امیر المومنین
کان یراہ منسوخا فان کان ھذا عن روایۃ کما ھو ظاھر اللفظ
لم یرد علیہ شیئی من الوجھین لان الامیر المومنین لا یقول
بہ الا عن علم و بعدہ لا مساغ للجمع و ان امکن باسھل وجہ
نعم ان ذکرہ القاضی ظنا منہ فالوجھان وجیھان اقول و
ثالثھما ما روینا فی الحدیث الثانی و الثلثین حیث جمع صلی
اللہ تعالی علیہ وسلم کلا الکلامین فی نسق واحد فاین النسخ
لا سیما و قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا عدوی مقدم فیہ
علی و فر من الجذوم و ما کان لصدر الکلام ان ینسخ اٰخرہ۔

सुवम भागने का हुक्म इसलिए है कि वहाँ ठहरेंगे तो उन पर नज़र पड़ेगी और उससे वह मफ़ासिद उजब व तहक़ीर व ईज़ा पैदा होंगे जिनका ज़िक्र गुज़रा।

उमदतुल क़ारी में है,

قال بعضهم الخبر صحيح و امره بالفرار منه لنهيه عن النظر

اليه اهما فى العينى اقول و لا يحتمله الحديث الخامس و

نظراؤه مما فيه الامران يكونوا فيهم بفصل رمح او رمحين ۔

चहारुम अम्र ए फ़िरार इसलिए कि उसकी बदबू वग़ैरह से ईज़ा न पाएं। शरह ए मुस्लिम लिनववी में है,

قيل النهى ليس للعدوى بل للتاذى بالرائحة الكريهة و

نحوها اهاقول و هذا ظاهر البعد فافهم ۔

पंजुम क़ौल ए मशहूर व मज़हब ए जमहूर व मशरब ए मंसूर कि दूरी व फ़रार का हुक्म इसलिए कि अगर क़ुर्ब व इख़्तिलात रहा और मआज़ अल्लाह क़ज़ा व क़दर से कुछ मर्ज़ उसे भी हादिस हो गया तो इबलीस लईन उसके दिल में वस्वसा डालेगा कि देख बीमारी उड़कर लग गई। यह अव्वल तो एक अम्र ए बातिल का एतिक़ाद होगा इसी क़दर फ़साद के लिए क्या कम था फिर मुतवातिर हदीसों में सुनकर कि रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने साफ़ फ़रमाया है बीमारी उड़कर नहीं लगती, यह वस्वसा दिल में जमना सख़्त ख़तरनाक वबाइल होगा लिहाज़ा ज़ईफ़ुल यक़ीन लोगों को अपना दीन बचाने के लिए दूरी बेहतर है, हाँ कामिलुल ईमान वह करे जो सिद्दीक़ ए अकबर व फ़ारूक़ ए आज़म रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा ने किया और किस क़दर मुबालग़ा के साथ किया अगर इयाज़न बिल्लाह कुछ हादिस होता उनके ख़्वाब में भी ख़्याल न

गुज़रता कि यह अदवा ए बातिला से पैदा हुआ, उनके लिए दिलों में कोह ए गिरां शिकोह से ज़्यादा मुस्तक़र था कि,

لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا۔

बे तक़दीर ए इलाही कुछ न हो सकेगा। इसी तरफ़ उस क़ौल व फ़ेअल ए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हिदायत फ़रमाई कि अपने साथ खिलाया और,

كل ثقه بالله و توكلا عليه۔

फ़रमाया। इमाम अजल अमीन, इमामुल फ़ुक़्हा व इमामुल मुहद्दिसीन व इमाम अहले जरह व तादील व इमाम अहलित तसहीह व तालील, हदीस व फ़िक़्ह दोनों के हावी सय्यिदुना इमाम अबू जाफ़र तहावी शरह ए मआनिल आसार शरीफ़ में दर बारा ए नफ़ी ए अदवा अहादीस साद इब्न ए मालिक व अली मुर्तज़ा व अब्दुल्लाह इब्न ए अब्बास व अबी हुरैरा व अब्दुल्लाह इब्न ए मसऊद व अब्दुल्लाह इब्न ए उमर व जाबिर इब्न ए अब्दुल्लाह व अनस इब्न ए मालिक व साइब इब्न ए यज़ीद व अबी ज़र रदि अल्लाहु तआला अन्हुम रिवायत करके फ़रमाते हैं,

فقد نفى رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم العدوى و فى هذه
الاثار و قد قال فمن اعدى الاول اى لما كان ما اصاب الاول
انما كان بقدر الله عزوجل كان ما اصاب الثانى كذلك فان قال

قائل فنجعل ھذا مضادا لما روی عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا یورد ممرض علی مصح کما جعلہ ابو ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ قلت لا و لکن یجعل قولہ لا عدوی کما قال النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم نفی العدوی ان یکون ابدا و یجعل قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا یورد ممرض علی مصح علی الخوف منہ ان یورد علیہ فیصیبہ بقدر اللہ تعالی ما اصاب الاول فیقول الناس اعداہ الاول فکرہ ایراد المصح علی الممرض خوف ھذا القول و قد روینا عن رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فی ھذہ الاٰثار ایضا وضعہ ید المجذوم فی القصعۃ فدل فعل رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ایضا علی نفی الاعداء لانہ لو کان الاعداء مما یجوز ان یکون اذا لما فعل النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ما یخاف ذلك منہ لان فی ذلك جر التلف الیہ و قد نھی اللہ عزوجل عن ذلك فقال وَ لَا تُلْقُوْا اَنْفُسَکُمْ و مر رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم بھدف مائل فاسرع فاذا کان یسرع من الھدف المائل مخافۃ الموت فکیف یجوز علیہ ان یفعل ما یخاف منہ الاعداء فھذا معنی ھذہ الاٰثار عندنا و اللہ تعالی اعلم ملتقطا۔

उमदतुल क़ारी में है,

التوفیق بین الحدیثین بما قالہ ابن بطال و ھو ان لا عدوی
اعلام بانھا لا حقیقۃ لھا و اما النھی فلئلا یتوھم المصح ان
مرضھا من اجل ورود المرضی علیھا فیکون داخلا بتوھمہ ذلك
فی تصحیح ما ابطلہ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم من
العدوی۔

मा सबत बिस्सुन्नह में जामिउल उसूल से है,

یقال اعدی المرض اذا اصابہ مثلہ لمقارنتہ و مجاورتہ او
مؤاکلتہ و مباشرتہ و قد ابطلہ الاسلام۔

उसी में मशारिक़ुल अनवार ए इमाम क़ाज़ी अयाज़ से है,

العدوی ما کانت تعتقدہ الجاھلیۃ من تعدی داء ذی الداء الی
من یجاورہ و یلاصقہ ممن لیس بہ داء فنفاہ الشرع و قولہ
صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا عدوی یحتمل النھی عن قول
ذلك و اعتقادہ و النفی لحقیقۃ ذلك کما قال صلی اللہ تعالی علیہ
وسلم لا یعدی شیئ شیئا و قولہ فمن اعدی الاول و کلاھما
مفھوم من الشرع۔

उसी में नुज़हतुन नज़र लिल हाफ़िज़ इब्न ए हजर से है,

الاولی فی الجمع ان یقال ان نفیہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم
للعدوی باق علی عمومہ و قد صح قولہ صلی اللہ تعالی علیہ

وسلم لا یعدی شیئ شیئا و قوله فمن اعدی الاول یعنی ان اللہ
سبحٰنه و تعالی ابتدأ ذلك فی الثانی کما ابتدأه فی الاول و اما
الامر بالفرار من المجذوم فمن باب سد الذرائع لئلا یتفق
للشخص الذی یخالطه شیئ من ذلك بقدر اللہ تعالی ابتداء لا
بالعدوی المنفیة فیظن ان ذلك بسبب مخالطة فیعتقد صحة
العدوی فیقع فی الحرج فامر بتجنبه حسما للمادة و اللہ تعالی
اعلم۔

शरह ए मसाबीह इमाम तूरपुशती व शरह ए मिशकात अल्लामा तय्यबी व मिरक़ात अल्लामा क़ारी व शरह ए अल मोअत्ता लिल अल्लामा मुहम्मद अज़ ज़रक़ानी वग़ैरह में है,

و اللفظ للزرقانی الاکثر ان المراد نفی ذلك و ابطاله کما دل
علیه ظاهر الحدیث۔

अशियतुल लमआत शेख़ मुहक़्क़िक़ में है,

اکثر بر آنند که مراد نفی عدوی و ابطال اوست مطلقاً چناچه
ظاہر احادیث در آن ست۔

उसी में है,

اعتقاد جاہلیت آں بود که بیمارے که در پہلوئے بیمارے
نشیند یا ہمراہ وے بخورد سرایت کند بیماری او بوے
گفته اند که بزعم اطبا ایں سرایت در ہفت مرض است

جذام و جرب و جدری و حصبہ و بخر و رمد و امراض وبائیہ
پس شارع آن را نفی کرد و ابطال نمود یعنی سرایت نمی باشد
بلکہ قادر مطلق ہمچناں کہ او را بیمار کرد ایں را نیز کرد۔

बिलजुमला इन पांचों अक़्वाल पर अदवा बातिल महज़ है, यही मज़हब है हज़रत अफ़ज़लुल औलिया इल अव्वलीन वल आख़िरीन सय्यिदुना सिद्दीक़ ए अकबर व हज़रत सय्यिदुना फ़ारूक़ ए आज़म व हज़रत सलमान फ़ारसी व हज़रत उम्मुल मोमिनीन सिद्दीक़ा व हज़रत अब्दुल्लाह इब्न ए उमर रदि अल्लाहु तआला अन्हुम अजिल्ला ए सहाबा ए किराम का और इसी को इख़्तियार फ़रमाया इमाम अजल्ल तहावी सय्यिदुल हनफ़िया व इमाम याहया इब्न ए याहया मालिकी व इमाम ईसा इब्न ए दीनार मालिकी व इमाम इब्न ए बताल अबुल हसन अली इब्न ए ख़ल्फ़ मग़रिबी मालिकी व इमाम इब्न ए हजर असक़लानी शाफ़ई व अल्लामा ताहिर हनफ़ी व शेख़ ए मुहक़्क़िक़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस हनफ़ी वग़ैरहुम जमहूर उलमा ए किराम रहिमहुमुल्लाहि तआला ने। उमदतुल क़ारी में तिबरी से है,

كان ابن عمر و سلمان رضی الله تعالی عنهم يصنعان الطعام
للمجذومين و ياكلان معهم و عن عائشة رضی الله تعالی عنها
قالت كان مولی لنا اصحابه ذلك الداء فكان ياكل فی صحانی و
يشرب فی اقداحی و ينام علی فراشی۔

यानी अब्दुल्लाह इब्न ए उमर व सलमान रदि अल्लाहु तआला अन्हुम मजज़ूमीन के लिए खाना तैयार फ़रमाते और उनके साथ खाते और उम्मुल मोमिनीन रदि अल्लाहु तआला अन्हा से मरवी हुआ कि हमारे एक ग़ुलाम आज़ाद शुदा को यह मर्ज़ हो गया था, वह मेरे बर्तनों में खाता, मेरे प्यालों में पीता, मेरे बिछौने पर सोता। ज़रक़ानी अलल मोअत्ता में ज़ेर ए हदीस

انہ اذی

फ़रमाया,

قال یحیی بن یحیی سمعت ان تفسیرہ فی رجل یکون بہ
الجذام فلا ینبغی لہ ان ینزل علی الصحیح یؤذیہ لانہ و ان
کان لا یعدی فالانفس تکرھہ و قد قال صلی اللہ تعالی علیہ
وسلم انہ اذی یعنی لا للعدوی۔

ग़रज़ मज़हब यह है और वह जो तावील में असह व अजमा

वजह ए पंजुम

و ھھنا ثلثۃ وجوہ اخر لبعض العلماء فالسادس ان الجذام
مستثنی من قولہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم لا عدوی ان لا
یعدی شیئ شیئا الا ھذا وعزاہ فی اشعۃ اللمعات الی الکرمانی
الشافعی صاحب الکوکب الدراری فی شرح صحیح البخاری
اقول لم یقلہ بل نقلہ و ما رضیہ بل مرضہ فانما حکاہ بقیل

كما نقل عنه فی محمع البحار بل و الشیخ نفسه فی ما ثبت
بالسنة فما ھٰھنا سبق قلم ثم ھذا القیل لم یعرف له قائل و
لم یمل الیه مائل و لا یؤیده شیئ من الدلائل۔ و السابع قال
البغوی قیل ان الجذام ذو رائحة تسقم من اطال صحبته و
مؤاکلته او مضاجعته و لیس من العدوی بل من باب الطب کما
یتضرر باکل ما یعاف و شم ما یکره و المقام فی مقام لا یوافق
ھواه و کله باذن الله و ما ھم بضارین به من احد الا باذن الله
نقله فی المجمع و عزاه فی الاشعة للامام النووی اقول لعل ھذا
ایضا لذاك فان الذی رأیت فی منھاجه تصویب الوجه الثامن
الاٰتی و لم یعرج علی ذکر ھذا فالله تعالی اعلم و ظنی ان الذی
فی نسختی الاشعة تصحیف من البغوی فان الذی نقله ترجمة
کلام البغوی سواء بسواء غیر ان البغوی ایضا لم یقل به و
انما نقله بقیل ممرضا۔ ثم اقول لا ادری ما التنافی بین بابی
العدوی و الطب فالطب قائل فی ھذا المرض بالعدوی کما نقل
التورپشتی و الطیبی و القاری و الزرقانی و الشیخ المحقق
وغیرھم ان العدوی بزعم الطب فی سبع کما تقدم عن
الشیخ و یستوی فی ذلك کونھا الکیفیة فیه او الخاصیة فان کلا
الفصلین من مسائل الطب و لیس ان العدوی انما تکون اذا

كانت لا بسبب يعقل و القائلون بها انما يعتقدون الاعداء و
لا نظر لهم الى انه بالكيفية او بالخاصية فمن قال بالاعداء و
لو لرائحة فقد قال بالعدوى و الثامن ان النفى اعداء المرض
من دون اذن الله تعالى كما زعمه اهل الجاهلية اما الاعداء
عادة باذن الله تعالى فثابت و لذا امر بالفرار و نهى عن ايراد
الممرض و لا اعلمه اعنى اثبات العدوى العادية ثابتا عن
الصحابة رضى الله تعالى عنهم الا ما يفيده كلام الامام
الطحاوى رحمه الله تعالى فيما تقدم من انكار ابى هريرة رضى
الله تعالى عنه حديث لا عدوى و اقامته على رواية لا يوردن ان
ذلك كان ظنه التضاد بينهما اقول ليس لمثلى الكلام مع مثل
الامام رحمه الله لكن الذى يعرفه قاصر مثلى ان انكار الرواية
لا ينحصر فى ظن التضاد بل نسى عنه سمعه من رسول الله صلى
الله تعالى عليه وسلم فما وسعه الا انكاره حتى لو فرض مودى
الحديثين واحدا من كل جهة و انما الالفاظ غير الالفاظ و نسى
سماع احدهما و قيل له رويت هذا الحديث هكذا لم يسعه الا
الاباء نعم هو مذهب الامام المطلبى محمد بن ادريس
الشافعى رضى الله تعالى عنه قال المناوى فى فيض القدير
(اتقوا المجذوم) اى اجتنبوا مخالطته فانه يعدى المعاشر

كما جزم به الشافعی فی موضع و حکاہ عن الاطباء و المجربین فی اخر و نقله غیرہ من افاضل الاطباء اھ۔اقول و طریقته رضی الله تعالی عنه فی امثال المقام معروفة من الاعتماد علی التجارب حتی قال بالقیافة و جعلها حجة فی الاحکام الشرعیة و حکایاته رضی الله تعالی عنه فیها مشهورة فی مقاصد السخاوی وغیرها ماثورة و تبعه علیه احد شیخی مذهبه الامام ابو زکریا النووی و من قبله الامام ابو عمرو بن الصلاح و من بعدهما الکرمانی و الطیبی و کذا ابن الاثیر فیما ذکر القاری و کذا السخاوی علی شبهته فی عبارة الموجودة فی نسختی المقاصد و وافقهم من علمائنا التورپشتی و القاری کما وافقنا من ائمتهم العسقلانی و اضطرب ظاهرا کلام المناوی فقال تحت حدیث اتقوا المجذوم ما قال قال و لا یناقضه خبر لا عدوی لانه نفی لاعتقاد الجاهلیة نسبة الفعل لغیر الله تعالی الخ و قال تحت حدیث کلم المجذوم لئلا یعرض لك جذام فتظن انه اعداك مع ان ذلك لا یکون الا بتقدیر الله تعالی و هذا خطاب لمن ضعف یقینه و وقف نظره عند الاسباب اھ ففی هذا نوع میل الی ما علیه الجمهور و وقع نحوه لعلامة الزرقانی فی شرح المؤطا فی موضع واحد فقال

تحت قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم لا یحل الممرض علی
المصح فربما یصاب بذلك فیقول لو انی ما احللته لم یصبه و
الواقع انه لو لم یحله لاصابه لان اللہ تعالی قدره فنهی عنه
لهذه العلة التی لا یؤمن غالبا من وقوعها فی طبع الانسان و هو
قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم فر من المجذوم فرارك من
الاسد و ان کنا نعتقد و ان الجذام لا یعدی لکنا نجد فی
انفسنا نفرة و کراهیة لمخالطته اھ فهذا صریح فی وفاق
الجمهور ثم قال اما النهی عن ایراد الممرض فی باب اجتناب
الاسباب التی خلقها اللہ و جعلها اسبابا للهلاك او الاذی و
العبد مامور اتقاء اسباب البلاء اذا کان فی عافیة منها و فی
حدیث مرسل عند ابی داؤد انه صلی اللہ تعالی علیه وسلم مر
بحائط مائل فقال اخاف موت الفوات اھ ففیه میل ما الی
القول الاٰخر بل کان جزما به لو لا قوله او الاذی ثم عاد فقال
تحت قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم انه اذی ای یتاذی به لا
انه یعدی ثم نقل عن یحیی بن یحیی ما قدمناه وقد اٰذنا ک
ان المائلین الی هذا القول کالتور پشتی و الطیبی و القاری قد
اعترفوا جمیعا کنص الشیخ المحقق و الزرقانی ان ابطال
العدوی راسا هو الذی علیه الاکثرون۔ اقول وارجوان لا ینکر

عليه بما قال الامام النووی فی شرح مسلم قال جمهور العلماء
يجب الجمع بين هذين الحديثين و هما صحيحان قالوا و
طريق الجمع ان حديث لا عدوی المراد به نفی ما كانت عليه
الجاهلية تزعمه و تعتقده ان المرض و العاهة تعدی بطبعها
لا يفعل الله تعالی و اما حديث لا يورد ممرض علی مصح فارشد
فيه الی مجانبة ما يحصل الضرر عنده فی العادة بفعل الله
تعالی و قدره قال فهذا الذی ذكرناه من تصحيح الحديثين و
الجمع بينهما هو الصواب الذی عليه جمهور العلماء و يتعين
المصير اليه اه فقد يكون المعزو الی جمهور العلماء وجوب
الجمع و تصحيح الحديثين لا خصوص هذا الجمع و ربما يشير
اليه انه بعد ذكر هذا الجمع لم يقل ان هذا الذی ذكرناه هو
الصواب الذی عليه الجمهور بل فسر المذكور بقوله من
تصحيح الحديثين و الجمع بينهما و لو اراد خصوص الجمع لم
تكن حاجة الی التفسير اصلا لكون الاشارة متصلة بذلك
الجمع من دون فصل فضلا عن يفسره بالاعم و حينئذ يكون
قوله هذا احترازا عن الوجهين الاولين الذين قدمنا هما ان
احد الحديثين غير ثابت لو منسوخ فيكون مثل ما نقل هو
فيما بعد عن الامام القاضی عياض انه قال و قد ذهب عمر

رضی اللہ تعالی عنہ وغیرہ من السلف الی الاکل معہ و راوا ان
الامر باجتنابہ منسوخ و الصحیح الذی قالہ الاکثرون و
یتعین المصیر الیہ انہ لا نسخ بل یجب الجمع بین
الحدیثین و حمل الامر باجتنابہ و الفرار منہ علی
الاستحباب و الاحتیاط لا للوجوب و اما الاکل معہ ففعلہ
لبیان الجواز اھ و اذن یکون قولہ قالوا و طریق الجمع الخ علی
ما ھو المتعارف بین العلماء من نقل اقوال جمع بلفظۃ قالوا
الا ان مرجعہ جمہور العلماء کیلا یخالف نقل الاکثرین عن
الاکثرین منہم التورپشتی و القاری انفسہما و اللہ تعالی
اعلم ثم من الحجۃ لنا علیہم اولاً ظاھرا لاحادیث المتواترۃ
کما اعترفوا بہ و لا معدل عن ظاھرا لا بدلیل و این الدلیل و
ثانیاً ما قدمنا عن الامام الطحاوی ان لو کان ذلک من اسباب
الھلاک العادیۃ لم یفعلہ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم و لا
الخلفاء الراشدون و لا امر بالاکل معہم تواضعا و ایمانا فان
مجانبتہ حینئذ مامور بہ شرعا لقولہ تعالی وَلَا تُلْقُوْا
اَنْفُسَکُمْ و قولہ تعالی وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّھْلُکَۃِ۔ و کان
کالجدار المائل و السفینۃ المکسورۃ و قد اعترف بہ ھؤلاء
المثبتون للعدوی کما ستقف۔ قول و لیس من التوکل

المعارضة مع الاسباب و الهجوم على ماجرت العادة بافضائه
الى التباب و لا يحل لاحد ان يلقى نفسه من فوق جبل توكلا
على ربه عزوجل و ايقانا بانه لا يضره ان لم يشاء و قد حكى
ان الشيطان سال ذلك سيدنا عيسى كلمة الله على نبينا
الكريم و عليه الصلوة و التسليم فقال لا اختبر ربى و نصوا
بممانعة ركوب البحر عند هيجانه و به ظهر الجواب عن حمل
مثبتى العدوى حديث كل ثقة بالله و امثاله على التوكل و
متاركة الاسباب و قد ذكر من فعل الصديق الاكبر و الفاروق
الاعظم و مبالغتهما فى ذلك ما يرشدك انه نص فى رد ما ذهبوا
اليه و لنذكر ههنا كلام العلامة على القارى عليه رحمة البارى
فانه جمع ما اتى به المثبتون و زاد و نذكر فى خلاله ما فتح الله
تعالى علينا من وجوه اختلاله قال رحمه الله تعالى قد (عـ)
اختلف العلماء فى التاويل فمنهم من يقول المراد منه نفى
ذلك و ابطاله على ما يدل عليه ظاهر الحديث و هم الاكثرون
و منهم من يرى انه لم يرد ابطالها فقد قال صلى الله تعالى
عليه وسلم فر من المجذوم فرارك من الاسد اقول ارادة
الابطال هو الظاهر كما اقر به و ما ذكر لا يصلح صارفا له لما
علمت من وجوه التاويل قال و قال صلى الله تعالى عليه وسلم لا

يوردن ذوعاهة على مصح اقول هذا اضعف و ابعد بعد ما روينا عن المؤطا انه صلى الله تعالى عليه وسلم لما نفى العدوى و نهى عن ايراد الممرض قالوا و ما ذاك قال و انما اراد بذلك نفى ما كان يعتقده اصحاب الطبعية فانهم كانوا يرون العلل المعدية موثرة لا محالة فاعلمهم ان ليس الامر على ما يتوهمون بل هو معلق بالمشية ان شاء كان و ان لم يشاء لم يكن اقول كل شيئ كذلك و جميع الاسباب متساوية الاقدام فى ذلك و لم يات الشرع بنفى

عـ : هذا كله كلام التورپشتى سوى ما زاد من شرح المنحة ۱۲ منه۔

الاسباب بل اثبتها و ارشد الى نفى تاثيرها و اعتقاد اصحاب الطبعية فى العين ليس بادون من اعتقادهم فى العدوى ثم لم يات الشرع بنفيها بل قال العين حق۔ قال و يشير الى هذا المعنى قوله صلى الله تعالى عليه وسلم فمن اعدى الاول اى ان كنتم ترون ان السبب فى ذلك العدوى لا غير فمن اعدى الاول اقول اولا بون بين ان يعتقدوا العلل موثرة فى العدوى و ان يعتقدوا العدوى هى الموثرة وحدها و الثابت

عنهم ذلك لا هذا و قد وقع مثل هذا للمناوی فی التیسیر فقال
هو من الاجوبة المسکتة اذ لو جلبت الادواء بعضها بعضا لزم
فقد الدواء الاول لفقد الجالب اھ و انت تعلم انہ غیر لازم
اصلا ما لم یقولوا بالسبب عند سلب الجلب و لیس هذا
زعمهم و لا لازم زعمهم و الرجیح الفصیح فی تفسیر الحدیث
ما قدمت و الیه جنح الامام الطحاوی کما علمت ذکرہ بلسان
المتکلم الامام العینی فی شرح البخاری فقال ای من اجرب
البعیر الاول یعنی ممن سری الیه الجرب فان قلت من بعیر
اخر یلزم التسلسل و ان قلت بسبب اخر فعلیك بیانه و ان
قلت ان الذی فعله فی الاول هو الذی فعله فی الثانی ثبت
المدعی و هو ان الذی فعل فی الجمیع ذلك هو الله الخالق القادر
علی کل شیئ و هذا جواب من النبی صلی الله تعالی علیه وسلم فی
غایة البلاغة و الرشاقة اھ اقول کل کلامه صلی الله تعالی علیه
وسلم کذلك کیف و قد اوتی جوامع الکلم و لا حاجة فی تفسیر
الی ما ذکرتم من الشق الثانی فانه اذا اعترف انه لیس
بالعدوی بل بسبب اخر فقد انقطع لثبوت ان للمرض سببا
اخر فلیکن الثانی ایضا بذلك السبب فلم تثبت العدوی
لعدم الدلیل علی الدعوی و اقول ثانیا علی کل فای اشارة فی

من اعدی الاول الی اثبات العدوی عادۃ لا تاثیرا قال و بین
بقولہ فر من المجذوم و بقولہ فر من المجذوم و بقولہ لا
یوردن ذوعاھۃ علی مصح ان مدا ناۃ ذلك سبب العلۃ فلیتقہ
اتقائہ من الجدار المائل و السفینۃ المعیوبۃ اقول فاذن کان
یجب التباعد عنہ علی الخواص و العوام و ینافیہ ما ثبت من
فعلہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم و فعل الخلفاء الراشدین و
حدیث کل مع صاحب البلاء قال و قد رد الفرقۃ الاولی علی
الثانیۃ فی استدلالھم بالحدیثین ان النھی فیھما انما جاء
شفقا علی مباشرۃ احد الامرین فتصیبہ علۃ فی نفسہ او عاھۃ
فی ابلہ فیعتقد ان العدوی حق اھ قلت و قد اختارہ العسقلانی
فی شرح النخبۃ و بسطنا الکلام معہ فی شرح الشرح و مجملہ
انہ یرد علیہ اجتنابہ علیہ الصلوۃ و السلام عن المجذوم
عند ارادۃ المبایعۃ اقول قد مر فیہ من الوجوہ ما یکفی و
یشفی و لا یثبت معھا اجتنابہ صلی اللہ تعالی وسلم عنہ
بالمعنی الذی رقم علی انہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ربما کان
یتنزل من مرتبتہ لیستن بہ۔ قال مع ان منصب النبوۃ بعید
من ان یورد لحسم مادۃ ظن العدوی کلاما یکون مادۃ لظنھا
ایضا فان الامر بالتجنب اظھر فی فتح مادۃ ظن ان العدوی لھا

تاثیر بالطبع اقول اولا قد قدمنا فی تقریر کلام النفاۃ السراۃ
ما یرشدك الی الجواب الم تر ان النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ
وسلم قد نفی العدوی جھارا و اعلن بہ مرارا و قطع عرقہ
بقولہ فمن اعدی الاول و قولہ فمن اجرب الاول و قولہ ذلکم
القدر و قد بلغہ تبلیغا واضحا معروفا عند الکل حتی تواتر
عنہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم و شاع و ذاع و ملأ الاسماع و
البقاع فای مشار لھذا الظن بعد کل ھذا الشدد الشن بیدانہ
اذ قد ازیدت ھذہ الوسوسۃ من قلوب المؤمنین بقیت خشیۃ
انھم لانتفاء ھذا التوھم یخالطون المبتلین و لا یتحامونھم
و فیھم ضعفاء الیقین بل ھم الاکثرون و الشیطان یجری
من الانسان مجری الدم و کان امر اللہ قدرا مقدورا فان
اصاب احدا شیئ یلقی العدو فی قلبہ ان ھذا للعدوی فیفر ھذا
بدینہ اشد مما کان یفر لو لم یعلم ان النبی صلی اللہ تعالٰی
علیہ وسلم قد نفاھا فحملتہ رحمتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم
من رؤف بالمومنین رحیم ان نھاھم عن المخالطۃ اذ بدونھا
ان حدث شیئ و العیاذ باللہ تعالٰی لا یحدث فساد اعتقاد و اذا
کان الامر فی ھذا الباب کما وصفنا لك فھل کان لسد ھذا الباب
طریق غیر ھذا الطریق الانیق الذی سلکہ الحکیم الرحیم

صلى الله تعالى عليه وسلم و اذا كان الامر بالتجنب عندكم
شفقا على ابدانهم فما لكم لا تجيزونه شفقا على ايمانهم
عليك بالانصاف۔ ثانياً يا سبحٰن الله من اين جاء ظن التاثير
بالطبع اليس قد نهى الشارع عن اقتحام اسباب الهلاك و
اسرع صلى الله تعالى عليه وسلم حين مر بهدف مائل فهل فيه
فتح باب ظن انها تؤثر بذاتها قال و على كل تقدير فلا دلالة
اصلا على نفى العدوى مبنياً و الله تعالى اعلم اقول اولا ان لم
يدل نفى الجنس و النكرة الداخلة فى خير النفى على عموم
النفى فماذا يدل بل لا دلالة على تخصيص النفى بكونها
بالطبع و الله تعالى اعلم و ثانيا لم يظهر لى معنى قوله على كل
تقدير فان على تقدير تعميم النفى الدلالة عليه فى غاية
الظهور فليتأمل قال قال الشيخ التورپشتى و ارى القول الثانى
اولى التاويلين لما فيه من التوفيق بين الاحاديث الواردة فيه
اقول اولا التوفيق حاصل على القول الاول ايضا كما بينا و
لعله لهذا عدل الطيبى عن هذا التعليل الى قوله ارى القول
الثانى اولى لما فيه من التوفيق بين الاحاديث و الاصول الطبية
التى ورد الشرع باعتبارها على وجه لا يناقض اصول التوحيد
اھ اقول لا حاجة بنا الى تطبيق الشرع باصول الطب الفلسى

بل نؤمن بالشرع و نجری نصوصه علی ظواهرها فان وافقها
الطب وغیره فذاك و الا رمینا المخالف بالجدار كائنا ماكان و
الحمد لله رب العٰلمین و اقول ثانیا بل التوفیق علی القول
الاول اظهر و ازهر فان منصب النبوة اجل من ان یبالغ فی نفی
امر حق هذه المبالغة و لا یرشد الی اثباته الا بامر محتمل
غیر بین و ثالثا بل حق التوفیق منحصر فیما اختاره الجمهور
لانه لیس فیه صرف شیئ من الاحادیث عن الظاهر و ارتكاب
تخصیص من دون ملجیئ ظاهر ۔ قال ثم لان القول الاول
یفضی الی تعطیل الاصول الطبیة و لم یرد الشرع بتعطیلها
بل ورد باثباتها والعبرة بها علی الوجه الذی ذكرناه اقول لا
نسلم ان الشرع سلم الطب بتفاصیلها و الافاضل الثلثة
التورپشتی و الطیبی و القاری هم الناقلون كغیرهم ان الاطباء
یعتقدون الاعداء فی الطاعون و الوباء فلو صدقهم الشرع فی
ذلك لم یامر بالثبات و عدم الخروج من حیث وقع لكونه اذ
ذاك القاء بالایدی الی التهلكة و لم یجعل الفار منه كالفار من
الزحف بل كان كالفار من جدار یرید ان ینقض مع ان هذا
الامر متواتر عنه صلی الله تعالی علیه وسلم و قد وعد علیه
الاجر العظیم فعلم ان مزعومهم هذا باطل عند الشرع و

انما نهى عن الدخول عليه كما امر بالفرار من المجذوم لانه
عسى ان يدخل فيبتلى بالقدر فيقول اعديت او يقول لو لا
الدخول لما ابتليت و مثل لو هذه تفتح عمل الشيطان و
العياذ بالله تعالى قال و يدل على صحه ما ذكرنا قوله صلى الله
تعالى عليه وسلم قد بايعناك فارجع و قوله صلى الله تعالى عليه
وسلم كل ثقة بالله و لا سبيل الى التوفيق بين هذين
الحديثين الا من هذا الوجه بين بالاول التوقى من اسباب
التلف و بالثانى التوكل على الله جل جلاله و لا اله غيره فى
متاركة الاسباب و هو حاله (ع) اهاى كلام التورپشتى قال
القارى هو جمع حسن فى غاية التحقيق و الله و لى التوفيق
اقول رحمك الله لقد حجرت واسعا فقد بان و ظهر جمع صاف
شاف لمع و زهر و قدمنا وجوه ترجيحه و ما ذكر من الجمع
ففيه ما فيه كما اسلفنا فان التوقى من اسباب التلف واجب على
الناس جميعا لا يستثنٰى من الخواص و ليس التوكل ترك
الاسباب و لا مضادة الحكمة و لا الاجتراء عليها بل اخراج
الاسباب عن القلب مع تعاطى النافع و تحاصى الضار و قصر
النظر على المسبب جل و علا قيدها و توكل على الله ثم قال
القارى تحت قوله صلى الله تعالى عليه وسلم و فر من المجذوم

و قد تقدم ان هذا رخصة للضعفاء و تركه جائز للاقوياء بناء
على ان الجذام من الامراض المعدية الخ اقول ارى كلمات
النافين و المثبتين جميعا مطبقة على ان الامر بالتوقى لضعفاء
اليقين و حديث كل ثقة بالله و كل مع صاحب البلاء و امثالهما
للكاملين صرح به ايضا فى المقاصد الحسنة و التيسير
وغيرهما و هذا ايضا من اول دليل على صحة قول النفاة فان
الاسباب العادية يستوى فيها الاقوياء و الضعفاء فلا يلتئم
هذا على قول المثبتين اما على قول النفاة واضح انه لا عدوى
حقيقة و انما الخشية ان يتوهمها من ابتلى بقدر و هذا لا
يخشى منه على الذين اٰمنوا و على ربهم يتوكلون جعلنا الله
تعالى منهم بفضل رحمته بهم اٰمين۔

बिलजुमला मज़हब ए मोतमद व सहीह व रजीह व नजीह यह है कि जुज़ाम, खुजली, चेचक, ताऊन वग़ैरहा अस्लन कोई बीमारी एक की दूसरे को हरगिज़ हरगिज़ नहीं लगती, यह महज़ औहाम ए बे अस्ल हैं। कोई वहम पकाए जाए तो कभी अस्ल भी हो जाता है कि इरशाद हुआ है,

انا عند ظن عبدى بى۔

वह इस दूसरे की बीमारी उसे न लगी बल्कि ख़ुद उसकी बातिनी बीमारी कि वहम परवरदा थी सूरत पकड़ कर ज़ाहिर हो गई। फ़ैज़ुल क़दीर में है,

بل الوھم وحدہ من اکبر اسباب الاصابۃ۔

इसलिए और नीज़ कराहत व अज़ीयत व ख़ुद बीनी व तहक़ीर ए मजज़ूम से बचने के वास्ते और नीज़ इस दूर अंदेशी से कि मबादा उसे कुछ पैदा हो और इब्लीस लईन वसवसा डाले कि देख बीमारी उड़कर लग गई और अब मआज़ अल्लाह उस अम्र

ع کذا فی نسختی المرقاۃ و علیہ فالضمیر لرسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اما کلام التورپشتی فھکذا بعد قولہ متارکۃ الاسباب یثبت بالاول التعرض للاسباب و ھو سنۃ و بالثانی ترک الاسباب و ھو حالۃ اھ فالحالۃ بتاء التانیث لا بھاء الضمیر ۱۲ منہ۔

की हक़्क़ानीयत उसके ख़तरा में गुज़रेगी जिसे मुस्तफ़ा सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बातिल फ़रमा चुके, यह उस मर्ज़ से भी बदतर मर्ज़ होगा, इन वुजूह से शरह हकीम व रहीम ने ज़ईफ़ुल यक़ीन लोगों को हुक्म ए इस्तिहबाबी दिया है कि उससे दूर रहें और कामिल ईमान बंदागान ए ख़ुदा के लिए कुछ हर्ज नहीं कि वह इन सब मफ़ासिद से पाक हैं। ख़ूब समझ लिया जाए कि दूर होने का हुक्म इन हिकमतों की वजह से है, न यह कि मआज़ अल्लाह बीमारी उड़कर

लग जाएगी, उसे तो अल्लाह व रसूल रद फ़रमा चुके, जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम। अक़ूल : फिर अज़ अन जा कि यह हुक्म इहतियाती इसतिहबाबी है वाजिब नहीं,

کما قدمنا عن النووی عن القاضی عن جمھور العلماء۔

हरगिज़ किसी वाजिब ए शरई का मुआरिज़ा न करेगा मसलन मआज़ अल्लाह जिसे यह आरिज़ा हो उसके औलाद व अक़ारिब व ज़ौजा सब इस इहतियात के बाइस उससे दूर भागें और उसे तन्हा और ज़ाया छोड़ दें यह हरगिज़ हलाल नहीं बल्कि ज़ौजा हरगिज़ उसे हमबिस्तरी से भी मना नहीं कर सकती लिहाज़ा हमारे शेख़ैन ए मज़हब इमाम ए आज़म व इमाम अबू युसुफ़ रदि अल्लाहु तआला अन्हुमा के नज़दीक जुज़ाम शौहर से औरत को दरख़्वास्त ए फ़स्ख़ का इख़्तियार नहीं। और ख़ुदा तर्स बंदे तो हर बेकस बे यार की इआनत अपने ज़िम्मा लाज़िम समझते हैं, हदीस में है रसूल उल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं,

اللہ اللہ فی من لیس لہ الا اللہ۔ رواہ ابن عدی عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ۔

अल्लाह से डरो उसके बारे में जिसका कोई नहीं सिवा अल्लाह के। ला जरम इमाम मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ फ़तहुल क़दीर में फ़रमाते हैं,

اما الثانی (ای قوله صلی اللہ تعالی علیه وسلم فر من المجذوم)

فظاهره غیر مراد للاتفاق علی اباحة القرب منه و یثاب

بخدمته و تمریضه و علی القیام بمصالحه ۔

यानी उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि मजज़ूम के पास उठना बैठना मुबाह है और उसकी ख़िदमत गुज़ारी व तीमारदारी मौजिब ए सवाब वल्लाहु तआला आलम।

و اذ خرجت المقالة فی صورة رسالة ناسب ان نسمها الحق

المجتلٰی فی حکم المبتلٰی و الحمد للہ علی ما انعم و علم و صلی

اللہ تعالی علی سیدنا و مولانا محمد و اله و صحبه وسلم ۔

हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)

अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?

अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना

इश्के मजाज़ी - मुंतखब मज़ामीन का मजमुआ

गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!

शबे मेराज गौसे पाक

शबे मेराज नालैन अर्श पर

हज़रते उवैस क़रनी का एक वाकिया

डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत

ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल

चंद वाकियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा

बिंते हव्वा

सेक्स नॉलेज

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहक़ीक़

औरत का जनाज़ा

एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी

40 अहादीसे शफा'अत

हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से

ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team From **Ahle Sunnat Wa Jama'at** Working **Since 2014** On The Aim To Propagate **Quraan And Sunnah** Through Electronic And Print Media.

We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website

www.abdemustafa.in

Books Library

books.abdemustafa.in
about 100+ tehqeeqi pamphlets & books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

www.enikah.in
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search "E Nikah Service" on Telegram)

Find us on Social Media Networks :

Subscribe us on YouTube @abdemustafaofficial
like and follow us on Facebook & Instagram @abdemustafaofficial
Join our official Telegram Channel t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram t.me/abdemustafalibrary
or search "Abde Mustafa Official" on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**

AMO
Abde Mustafa Official

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION